4

काल अचानक ही ले जायेगा...

काल अचानक ही ले जायेगा, गाफिल होकर रहेना क्या ।।
छिन हू तोकों नाहिं बचावै तो सुभटन का रखना क्या (रे) ।।
काल अचानक.....

रंच संवाद करन के काजै, नर्कन में दुःख भरना क्या ।
कुलजन पथिकनि के हित काजै जगत जाल में परना क्या ।।
काल अचानक....

इन्द्रादिक कोउ नाहिं बचैया, और लोक का शरणा क्या (रे) ।।
निश्चय हुआ जगत में मरना, कष्ट परै तब डरना क्या (रे) ।।
काल अचानक.....

अपना ध्यान करत खिर जावै, तौ कर्मनि का हरना क्या ।
अब हित करि, आर्त तजि 'बुधजन', जनम जनम में जरना क्या ।।
काल अचानक....

हे जीव ! यह काल अर्थात् मृत्यु अचानक ही तुझे ले जायेगी इसलिये इस संसार में बेहोश होकर मत रहो।

हे प्राणी मृत्यु के आने पर ! जो एक क्षण भी तुझे नहीं बचा सकते ऐसे योद्धाओं को अपने पास क्यों रखना ? अर्थात् उनको रखने से क्या फायदा ।

हे जीव ! लौकिक के जरा से वाद-विवाद के कारण नरक गति के दुःखों को क्यों सहते हो और परिवार - कुटुम्बीजनों के हित के लिये स्वयं संसार जाल में फंसना उचित नहीं है।

हे चेतन! जब इन्द्र जैसे बलशाली व्यक्ति भी तुझे नहीं बचा सकते तो जगत के अन्य लोगों से तो शरण की क्या आशा रखना ? इस जगत में मरना ही है तो कष्ट के आने पर या रोगादि-मृत्यु आदि आने पर उनसे घबराने से क्या फायदा ।

हे जीव ! जो कर्म निज आत्म ध्यान से तुरंत ही नष्ट हो जाते हैं तो ऐसे कर्मों की नष्ट करने की चिन्ता क्यो करना । बुधजन कवि तो कहते है कि आर्त-रौद्र, राग-द्वेष के परिणामों का त्यागकर अपना हित करो तो जन्म-जन्म के दुःखों को सहन नहीं करना पड़ेगा।